



THE
MENTORING
PROJECT

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ



DOMINIC AVILA

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ



DOMINIC AVILA

(डोमिनिक एविला)

विषय-सूची

परिचय: वह शान्ति जिसकी आप खोज करते हैं	4
भाग I: परमेश्वर के साथ शान्ति कैसे स्थापित करें	6
भाग II: परमेश्वर की शान्ति का अनुभव कैसे करें.....	10
भाग III: शान्ति के परमेश्वर का आनन्द कैसे लें	18
निष्कर्ष: परमेश्वर की शान्ति वास्तविक है, और आप उसे जान सकते हो	27

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ



परिचय: वह शान्ति जिसकी आप खोज करते हैं

कल्पना करें कि कोई स्वर्ग नहीं होता
यह सोचना आसान है यदि आप प्रयास करें
हमारे नीचे कोई नरक नहीं
हमारे ऊपर केवल आकाश
कल्पना करें सभी लोग
आज के लिए जीवन जीते हुए...
कल्पना करें कि कोई देश न होते
यह सोचना कठिन नहीं है
न मारने को कुछ, न मरने को
और कोई धर्म भी नहीं
कल्पना करें सभी लोग
शान्ति से जीवन जीते हुए...

आप कह सकते हैं कि मैं एक स्वप्नदर्शी हूँ
परन्तु मैं अकेला नहीं हूँ...

मार्च 1971 में, वियतनाम युद्ध की उथल-पुथल के बीच, जॉन लेनन नाम के एक व्यक्ति ने बैठकर एक गीत लिखा, जिसमें सभी लोगों को एक ऐसे जीवन की “कल्पना” करने को कहा गया जिसमें “न मारने को कुछ हो न मरने को।” वह शान्ति के लिए एक “विज्ञापन अभियान” था। वह और उसकी पत्नी योको युद्ध से निराश होकर एक ऐसे संसार की “कल्पना” कर रहे थे जिसमें धर्म, संपत्ति और सीमाएँ न हों। उसने कहा कि उसका गीत “व्यावहारिक रूप से द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो” है और वह मानता था कि इससे शान्ति बढ़ेगी और संसार एक हो सकेगा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

शान्ति, यह साठ और सत्तर के दशक के हर हिप्पी का जुनून थी, परन्तु वे अकेले नहीं थे। जॉन ने यह बात ठीक से समझी। हर पीढ़ी और हर व्यक्ति शान्ति की लालसा रखता है। कोई राजनीतिक संघर्ष और युद्ध से मुक्त जीवन चाहता है। कोई पीड़ित अंतरात्मा से छुटकारा चाहता है। कोई अपने व्यक्तिगत संबंधों में शान्ति चाहता है। हम सब शान्ति चाहते हैं और उसे पाने का प्रयास करते हैं, परन्तु स्थायी शान्ति अक्सर हमारे हाथ नहीं आती है।

ऐसा क्यों है? सम्भवतः इसलिए कि इसके असंख्य नकली रूप संसार में मौजूद हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि शान्ति धन से मिलती है। कुछ लोग लोगों को प्रसन्न करने की आदत में लग जाते हैं। और कुछ सच्चाई को दबाते हुए अपने-आपको व्यस्त रखते हैं, या समाप्त न होने वाले मनोरंजन में डूबे रहते हैं, यह आशा करते हुए कि भटकाव ही शान्ति दे देगा।

अन्ततः, नकली शान्ति कभी तृप्त नहीं करती है। यह अपनी प्यास बुझाने के लिए खारा पानी पीने के जैसा है: अर्थात् जितना अधिक आप इसे पीते हैं, उतनी ही अधिक प्यास लगती है। नकली शान्ति की मूल त्रुटि उसकी परिभाषा में ही छिपी है। सभी शब्दकोश शान्ति को केवल 'परेशानी का न होना' बताते हैं। यदि युद्ध नहीं है, विवाह में कलह नहीं है, नौकरी सुरक्षित है, परिवार स्वस्थ है, बिल चुकाए जा चुके हैं, तो संसार इसे "शान्ति" कहता है। किन्तु ऐसी शान्ति मुसीबत आते ही बिखर जाती है। नकली शान्ति केवल एक मृगतृष्णा है।

धन्यवाद हो कि परमेश्वर ने हमें सच्ची शान्ति की एक बिल्कुल भिन्न परिभाषा दी है। उसकी शान्ति परेशानी की अनुपस्थिति नहीं है; यह परेशानी के बीच में उसकी सामर्थी, शांत उपस्थिति है। यूहन्ना 16:33 में यीशु ने कहा, "मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।" परमेश्वर की शान्ति कोई भावनात्मक अनुभूति नहीं है जिसका आप पीछा करें परन्तु यह एक व्यक्ति है जिस पर आप भरोसा रखते हैं।

अब उन नकली बातों को हटाने का समय है, परमेश्वर की चिरस्थायी शान्ति को ग्रहण करने का समय है, और उसकी अनन्त उपस्थिति के आनन्द का अनुभव करने का समय है। जिस शान्ति की आप लालसा करते हैं, वह आपके द्वारा परिस्थितियों को नियंत्रित करने से नहीं मिलती है, परन्तु वह उस परमेश्वर के प्रति समर्पण में मिलती है जो सब कुछ नियंत्रित करता है और अपनी सिद्ध शान्ति आपसे बाँटना चाहता है। आइए हम आरम्भ करें।

1

परमेश्वर के साथ शान्ति कैसे स्थापित करें

शान्ति क्या है?

जब आप शान्ति शब्द सुनते हैं तो आपके मन में क्या आता है? थोड़ी शान्ति और सुकून? काम या बच्चों से थोड़ी राहत? हो सकता है कि आप शान्त परिवेश की कल्पना करते हों: धीमा संगीत, समुद्र तट या किसी जंगल की नदी के किनारे की जाने वाली मालिश या ध्यान? हो सकता है कि आप संबंधों में शान्ति चाहते हों? न चुगलखोरी, न झगड़ा, न नाटक, न तनाव। या हो सकता है कि आप विश्व-स्तर पर सोचते हों? कोई भी यहूदियों का नरसंहार, रंगभेद, नरसंहार या परमाणु युद्ध का खतरा नहीं।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, शान्ति मुख्य रूप से किसी वस्तु या व्यक्ति की उपस्थिति के विषय में है। सच्ची शान्ति परमेश्वर में ही मिलती है। शान्ति तब आती है जब पाप ने जो तोड़ा था उसका पुनर्स्थापन होता है। सिद्ध शान्ति पूर्ण रूप से एक बदलाव है, जो कि परमेश्वर की मूल रचना और क्रम की ओर वापसी है। यह उन चीजों का न होना है जो नहीं होनी चाहिए और उन चीजों का होना है जो मौजूद होनी चाहिए। सब कुछ अपने सही स्थान पर हो। सब कुछ पूर्ण हो।

शान्ति के लिए इब्रानी शब्द शालोम है। यह पुराने नियम में 236 बार आता है और यह न केवल शान्ति बल्कि पूर्णता की बात करता है।

अख्युब ने एक बार अपने घराने के बारे में बताया कि वे शालोम में हैं क्योंकि उनमें किसी चीज़ की कमी नहीं थी। दाऊद ने युद्ध के बीच में अपने भाइयों से उनके शालोम के बारे में पूछा। जब सुलैमान ने मंदिर का काम पूरा कर लिया, तो वह उसमें शालोम ले आया।

किसी वस्तु को शालोम के रूप में बहाल करना अर्थात् उसे पुनर्स्थापित करना, पूर्ण बनाना है। जब परमेश्वर ने संसार की रचना की, वह पूर्ण और सम्पूर्ण था। किन्तु पाप ने उस पूर्णता को चकनाचूर कर दिया। एक समय जहाँ मेल-मिलाप था, परन्तु वहाँ अब बैर है। परमेश्वर के साथ जहाँ घनिष्ठता हुआ करती थी परन्तु पाप के कारण अब दूरी और अलगाव है।

पाप करने के बाद आदम और हव्वा परमेश्वर से छिप गए क्योंकि पाप ने उन्हें उससे अलग कर दिया था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की कि स्त्री का वंश सर्प का सिर कुचलेगा। आखिरकार वह वंश कोई और नहीं है बल्कि यीशु मसीह है। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यीशु को “शान्ति का राजकुमार” कहा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

दरअसल, जब यीशु का जन्म हुआ, तो स्वर्गदूतों ने यह घोषणा की: “आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।” (लूका 2:14)

यीशु यह शान्ति कैसे लाया? स्वर्गदूतों ने केवल घोषणा नहीं की, यीशु को इसे पूरा करना पड़ा। उसने अपने जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा इस लम्बे समय से प्रतिज्ञा की हुई शान्ति को पूरा किया।

यीशु मसीह का सुसमाचार हर उस आत्मा के लिए आरम्भिक बिंदु है जो शान्ति चाहता है। किन्तु इसे पाने से पहले, हमें यह पहचानना होगा कि हमें इसकी आवश्यकता क्यों है।

हमें परमेश्वर के साथ शान्ति की आवश्यकता क्यों है?

मैथ्यू हेनरी ने एक बार पूछा, “जो लोग परमेश्वर के साथ शान्ति में नहीं हैं, उन्हें क्या शान्ति मिल सकती है?” इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर के बिना कोई शान्ति नहीं है।

सच्ची शान्ति, वह शान्ति है जो अपराधबोध को शांत करती है, आत्मा को स्थिर करती है, और पीड़ा के मध्य सामर्थ्य देती है, और यह परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के बिना कभी अस्तित्व में नहीं हो सकती है। क्यों? क्योंकि हमारी सबसे बड़ी समस्या भावनात्मक या राजनीतिक या मनोवैज्ञानिक नहीं है—यह संबंधों से जुड़ी हुई है।

हमारा अशांत होना हमारे विद्रोह से आरम्भ होता है। जब तक हम अपने सृष्टिकर्ता से मेल-मिलाप नहीं रखते हैं, तब तक कोई भी आराम हमारे डर को पूरी तरह शांत नहीं कर सकता है।

हम अपने अशांत मन को उपलब्धियों या उदासीनता से ढकने का प्रयास कर सकते हैं परन्तु जब तक पाप का निपटा नहीं जाता है, तब तक विवेक फुसफुसाता रहता है, “आप सही नहीं हैं और आप ठीक नहीं हैं। आप सुरक्षित नहीं हैं।” और सच तो यह है कि विवेक सत्य ही कह रहा होता है।

यदि आप परमेश्वर की शान्ति चाहते हैं, तो पहले आपको परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करना होगा। स्वयं के साथ मेल-मिलाप नहीं।

बाइबल सिखाती है कि पाप ने हमारे और परमेश्वर के बीच एक खाई बना दी है। रोमियों 5:10 कहता है कि हम में से हर कोई मसीह के पास आने से पहले शत्रु हैं। शत्रु निष्क्रिय रूप से उदासीन नहीं होते हैं। वे निरन्तर सक्रिय बैरभाव की अवस्था में होते हैं। मसीह के पास आने से पहले, बाइबल हमें परमेश्वर के राज्य में विद्रोही, व्यवस्था को तोड़ने वाला और बलवा करने वाला कहती है।

रोमियों 3:23 कहता है, “इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” इसका अर्थ है कि कोई भी इस संसार में सुरक्षित नहीं आता है। हम सब परमेश्वर से दूर होकर उसके विरुद्ध युद्ध की स्थिति में रहते हैं।

परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध ऐसा युद्ध है जिसे कोई मनुष्य नहीं जीत सकता है। परमेश्वर पवित्र है। मनुष्य दोषी है। और चाहे परमेश्वर कितना भी प्रेमी क्यों न हो, वह हमारे विद्रोह को कभी अनदेखा नहीं करेगा, क्योंकि वह

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

न्यायी भी है। यही कारण है कि हमारी ओर से परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप असम्भव है। हम पवित्र परमेश्वर को अपना अच्छा व्यवहार दिखाने के द्वारा रिश्त नहीं दे सकते हैं। हम अपने दोष को संकल्पों और विधियों से ढक नहीं सकते हैं। यदि शान्ति स्थापित होनी है, तो यह परमेश्वर की पहल से ही हो सकती है। उसे ही पहले बढ़ना होगा। और वह बढ़ा। परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए भेजा। हमें किसी ऐसे की आवश्यकता थी जो शान्ति-समझौते को तय करे और पूरा करे। यही मसीही विश्वास प्रदान करता है—एक शान्ति-समझौता जो मसीह के लहू से लिखा गया।

यह वह नींव है जिस पर किसी भी प्रकार की शान्ति का अनुभव किया जा सकता है। जब तक परमेश्वर के साथ युद्ध समाप्त नहीं होता है, शान्ति केवल आपकी कल्पना का एक भ्रम मात्र है। आपको कुछ क्षणों के लिए शान्ति मिल सकती है, परन्तु विश्राम नहीं मिलेगा। आप अपने अपराध बोध को दबा तो सकते हैं, परन्तु उसे कभी मिटा नहीं सकते हैं। शान्ति का आरम्भ क्रूस से होता है, क्योंकि वही पर शलुता खत्म होती है।

विद्रोही लोग एक पवित्र परमेश्वर के साथ कैसे सही संबंध में आ सकते हैं

रोमियो 5:1 इसे इस प्रकार रखता है: “अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।” परमेश्वर पापियों को धर्मी ठहराता है। वह उन्हें मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है, इस कारण नहीं कि वे इसके योग्य हैं, परन्तु इसलिए कि जो कुछ उसके पुत्र ने किया है। यीशु बलिदान की वेदी पर हमारे स्थान पर खड़ा हुआ, हमारी स्थानापन्नता लेकर सम्पूर्ण दण्ड को अपने ऊपर ले लिया। परमेश्वर ने आरोपों को नज़रअंदाज़ नहीं किया और न ही अपने पवित्र स्तर को कम किया। उसने हमारे स्थान को लेने के द्वारा न्याय को पूरा किया।

क्रूस पर, यीशु ने हमारे क्रोध को अपने ऊपर ले लिया। उसने श्राप को उठाया। उसने व्यवस्था को पूरा किया। उसने ऋण को पूर्ण रूप से चुका दिया। जब आप उस पर विश्वास करते हैं, तो आप उससे जुड़ जाते हैं। उसकी मृत्यु आपकी गिनी जाती है। उसका जीवन आपका आवरण बनता है। न्यायी अब आपको “धर्मी” घोषित करता है। और जहाँ धर्मी ठहराया जाना घोषित होता है, वहाँ शान्ति आरम्भ होती है।

यह शान्ति कोई क्षणिक भावना नहीं है—यह एक अहसास की जाने वाली वास्तविकता है। यह आपकी परिस्थितियों के साथ डगमगाती नहीं है। यह मसीह के पूरे हुए कार्य में निहित है और स्वयं परमेश्वर के धर्मी निर्णय से स्थिर है। जब परमेश्वर आपको धर्मी घोषित करता है, वह एक विधिक, आत्मिक और अनन्त निर्णय होता है। वह अब आपके विरुद्ध नहीं, आपके पक्ष में है। पूर्ण रूप से। हमेशा के लिए।

परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा? वह उन लोगों की ओर क्यों बढ़े, जो उसके विरोध में थे? रोमियो 5:8 इसका उत्तर देता है: “परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” परमेश्वर ने प्रतीक्षा नहीं की कि हम पहले स्वयं को साफ़ करें। उसने अनुग्रह देने से पहले बदलाव की माँग नहीं की। उसने बदलाव लाने के लिए अनुग्रह दिया। और यही शान्ति के सुसमाचार का हृदय है। यीशु ने केवल शान्ति का मार्ग नहीं दिखाया। वह स्वयं कलवरी के मार्ग पर चला और शान्ति को खरीदा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जब आप परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लेते हैं, तो आप उसके शत्रु नहीं रहते हैं। इसके बजाय, आप उसकी संतान बन जाते हैं। युद्ध समाप्त हो चुका है। निर्णय दिया जा चुका है। आप धर्मी ठहराए जा चुके हैं। किन्तु धर्मी ठहराया जाना कहानी का अंत नहीं है। यह एक नये प्रकार के जीवन का आरम्भ है, ऐसा जीवन जिसमें परमेश्वर न केवल शत्रुता को हटा देता है बल्कि आपकी आत्मा को शान्ति से भर देता है। यही वह स्थान है, जिसमें हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप से परमेश्वर की शान्ति की ओर बढ़ते हैं। परमेश्वर के साथ शान्ति विधिक, अहसास की जाने वाली, अपरिवर्तनीय है। यह मसीह के कार्य पर आधारित है और उसकी धार्मिकता की छाप इस पर है। परमेश्वर की शान्ति व्यक्तिगत, सुरक्षित और हमेशा के लिए है।

चर्चा और मनन:

1. शान्ति के कुछ नकली रूप क्या हैं जिनकी ओर आप बहुत अधिक आकर्षित होते हैं?
2. कठिनाइयों ने किन तरीकों से यह दिखाया है कि आप असल में किस पर भरोसा करते हैं ?
3. क्या आपने परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप किया है, या आप अभी भी उसकी स्वीकृति पाने का प्रयास कर रहे हो?
4. यदि आप सचमुच यह विश्वास करें कि अब परमेश्वर आपका मित्र है, तो आपका दिन-प्रतिदिन का मनोभाव कैसे बदलेगा?

2

परमेश्वर की शान्ति का अनुभव कैसे करें

परमेश्वर की शान्ति व्यक्तिगत है

फिलिप्पियों 4:9, “जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।” शान्ति व्यक्तिगत है। यह अनुभव की जा सकती है।

परमेश्वर आपको शान्ति को इस प्रकार नहीं देता है जैसे कोई अमेज़न डिलीवरी वाला आपको एक पैकेज दे जाए। शान्ति उसकी उपस्थिति से आती है। शान्ति उसके साथ आपके संबंध से बहती है। पौलुस केवल यह नहीं कहता है कि “तुम्हें शान्ति मिले” जैसे यह एक अमूर्त, निर्जीव भावना हो। नहीं, वह हमें बताता है कि शान्ति हमारे साथ कैसे रहती है: “शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।”

इस तरह हमें केवल राहत नहीं मिलती, बल्कि हमें संबंध मिलता है। हमें केवल एक भावना नहीं मिलती, हमें पिता मिलता है।

सैन्य सेवा वाले परिवारों के लिए, विशेषकर पत्नियों और बच्चों के लिए, आप इसे भलीभाँति जानते हैं। जब पिता कई महीनों या वर्षों तक तैनात रहते हैं, तो क्या आप केवल उनकी स्मृति से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं? क्या एक फोटो, एक पत्र या एक अच्छी भावना उनकी उपस्थिति का स्थान ले सकती है? नहीं! आप अपने पति या पिता को प्रत्यक्ष चाहते हैं। क्यों? क्योंकि उनकी निकटता सात्वना लाती है। उनकी आवाज़ शान्ति लाती है।

कुछ समय पहले मुझे यूट्यूब पर एक वीडियो मिला जिसका शीर्षक था, “सार्जेंट ने ताइक्रांडो लेसन में बेटे को हैरान किया।” इस वीडियो में आप देखते हैं कि एक पिता, जो एक वर्ष की तैनाती से लौटा है, अपने पुत्र के साथ मुक्केबाजी का खेल खेल रहा है, जो आँखों पर पट्टी बाँधे हुए है। और जब वे एक-दूसरे पर मुक्के बरसाते हैं, तो उसके पिता कहते हैं, “चिप, अपने हाथ ऊपर रखो।” लड़का अपने पिता को देख नहीं सकता है, परन्तु जब उसका पिता दोबारा वही निर्देश देता है, “चिप, अपने हाथ ऊपर रखो,” तो लड़का उसकी आवाज़ पहचान लेता है, तुरन्त पट्टी हटा देता है, अपने पिता को देखता है और दौड़कर उसे गले लगा लेता है।

ऐसे समय भी आते हैं, जब हमें लगता है कि परमेश्वर हमसे दूर है, परन्तु हम निश्चित रह सकते हैं कि वह हमेशा हमारे पास ही रहता है। उसकी आवाज़ उसके अनन्त वचन के द्वारा हमें नित्य आश्वासन देती रहती है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

उसने यह प्रतिज्ञा की है कि वह हमेशा हमारे साथ रहेगा और हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि उसकी उपस्थिति ही हमारी शान्ति है।

भजन 73:28 में भजनकार कहता है, “परन्तु परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है; मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है, जिस से मैं तेरे सब कामों का वर्णन करूँ।”

इफिसियों 2:14 कहता है, “क्योंकि वही हमारा मेल है।” और जहाँ वह है, वहाँ शान्ति राज्य करती है। यही कारण है कि पौलुस कहता है, “प्रभु निकट है” (फिलिप्पियों 4:5)। वह दूर नहीं है। वह अपने लोगों के साथ वास करने के लिए निकट आता है।

इसी कारण शान्ति मसीह के साथ निकटता से चले बिना स्थिर नहीं रह सकती। जितना आप उससे दूर बढ़ते हैं, उतनी ही शान्ति आपके हाथों से फिसलती जाती है। इसलिए नहीं कि वह दूर चला जाता है, परन्तु इसलिए कि आप उस पर से दृष्टि खो देते हैं, जो आपका शरणस्थान है। उसने प्रतिज्ञा की है कि वह आपको कभी न छोड़ेगा और न त्यागेगा, और जब आप उसमें बने रहते हैं, तो आप उसकी शान्ति का अनुभव करते हैं। परमेश्वर की शान्ति व्यक्तिगत है, क्योंकि यह इम्मानुएल अर्थात् परमेश्वर हमारे साथ है, उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति में अनुभव की जाती है।

परमेश्वर की शान्ति संरक्षित रहती है

परमेश्वर की शान्ति केवल उपस्थित और व्यक्तिगत ही नहीं है, वह सामर्थी रूप से सुरक्षित भी है।

फिलिप्पियों 4:7, “तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

क्या आपने यह विचार किया है कि परमेश्वर की शान्ति का सारी समझ से परे होना क्या अर्थ रखता है? यह समझ से परे है, इसलिए नहीं कि यह तर्कहीन है, बल्कि इसलिए कि यह मानवीय तर्क की सीमाओं से परे है।

जब जीवन बिखर रहा होता है, तब यह शान्ति केवल मजबूत महसूस नहीं होती है, वह वास्तव में मजबूत होती है। जब आप अपनी नौकरी खो देते हैं और सोचते हैं कि आप संसार में कैसे जीवित रहेंगे, तब परमेश्वर वहीं होता है जो आपकी शान्ति की रक्षा करता है। जब आप अस्पताल के कमरे में होते हैं और निदान मिलता है, परमेश्वर आपके साथ होता है, आपकी शान्ति की रक्षा करता है। जब आप कब्र-स्थल पर होते हैं और क्षति ने आपको झकझोर दिया होता है, तो वह आपके जितना निकट होता है, उतना आप सोच भी नहीं सकते हैं।

परमेश्वर की शान्ति कठिनाइयों को मिटा नहीं देती है, परन्तु वह आपको उनके बीच में थामे रखती है। यह आपको आपकी पीड़ा को भुलाने में सहायता नहीं करती है, परन्तु बल्कि यह आपको परमेश्वर के वायदों की ज्योति में पीड़ा को समझने में सहायता करती है। यह शान्ति मन का कोई छल नहीं है—यह आत्मा का कार्य है। बहुत से विश्वासी इसलिए संघर्ष करते हैं क्योंकि वे अपेक्षा करते हैं कि शान्ति सभी समस्याओं को दूर कर देगी। किन्तु परमेश्वर की शान्ति अक्सर विपत्ति के बीच में सबसे अधिक अनुभव की जाती है।

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

परमेश्वर की शान्ति सदा बनी रहती है

परमेश्वर की शान्ति व्यक्तिगत है, सुरक्षित है और हमेशा के लिए भी है। एक बार जब यह आप पर अधिकार कर लेती है, यह कभी आपको छोड़ती नहीं है।

यशायाह 54:10 “चाहे पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ टल जाएँ, तौभी मेरी करुणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।”

जब आपका परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप होता है, तो यह समय के साथ फीकी नहीं पड़ता या आपकी भावनाओं के साथ उतार-चढ़ाव नहीं करता है। शान्ति अच्छी तरह समय पर खरी उतरती है। इस पर झुंझियाँ नहीं पड़ती हैं, यह फीका नहीं पड़ता है या कमजोर नहीं पड़ता है। परमेश्वर के साथ शान्ति परिवर्तन के समय का केवल एक बार का अनुभव नहीं है या ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो आपको पहले हुआ करती थी। यह वर्तमान की और स्थायी वास्तविकता है।

आपके धर्मों ठहराए जाने की दशा का अर्थ यह है कि आपको इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि आप परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप में कभी आते हैं, और कभी जाते हैं, क्योंकि आप उसमें स्थिर होकर बंधे हुए हैं।

रोमियों 5:10 इसे स्पष्ट करता है: “क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?”

मसीह की मृत्यु ने मेल-मिलाप किया। मसीह का जीवन उसे बनाए रखता है।

यीशु ने यूहन्ना 14:27 में कहा, “मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे।”

संसार की शान्ति परिस्थिति के अनुसार होती है। परमेश्वर की शान्ति वाचा-आधारित है। एक बार जब उसने इसे दे दिया, तो वह उसे वापस नहीं लेता है। मसीह के पुनरुत्थान और उसके भीतर वास करने वाले आत्मा की उपस्थिति आपकी छाप और गारंटी है। क्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने स्थायी रूप से हमारे हृदयों में निवास ग्रहण कर लिया है, हम हमेशा शान्ति पाएँगे।

मसीह ने आपकी शान्ति को बड़ी कीमत देकर खरीदा है, आप निश्चय रख सकते हैं कि अब वह उसे सुरक्षित रखेगा। वह न केवल उसे सुरक्षित रखता है, परन्तु जब आप उसके भीतर वास करनेवाले आत्मा के अधीन होते हैं, तब वह उसे पोषित करता और बढ़ाता भी है।

पौलुस हमें रोमियों 15:13 में बताता है कि यह शान्ति आशा और आनन्द से पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा प्रवाहित होती है: “परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।”

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जीवन की परिस्थितियों और भावनात्मक सामर्थ्य में आपको उतार-चढ़ाव होंगे, परन्तु शान्ति एक पक्का वायदा है जो परमेश्वर के चरित्र में जड़ित है। उसकी शान्ति कभी आपको नहीं छोड़ेगी क्योंकि वह कभी आपको नहीं छोड़ेगा (इब्रानियों 13:5)। इसका अर्थ यह नहीं है कि आपकी शान्ति कभी नहीं डगमगाएगी, इसका केवल यह अर्थ है कि जब ऐसा होगा, तो आप याद कर सकते हैं और स्वयं को भरोसा दिला सकते हैं कि परमेश्वर ने क्या वायदा किया है।

और यह हमें हमारे अगले प्रश्न की ओर ले जाता है: हम अपनी शान्ति को कैसे बढ़ा सकते हैं और इसे कैसे मज़बूत कर सकते हैं? यदि धर्मा ठहराया जाना मूल है, तो मसीह में बढ़ना इसका फल है। तो आइए अब देखें कि परमेश्वर की शान्ति के अपने अनुभव को कैसे मज़बूत करें, केवल सिद्धांत में ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी।

हर बात के विषय में प्रार्थना करें

यदि आप परमेश्वर की शान्ति में चलना चाहते हो, तो आपको सब कुछ प्रार्थना में परमेश्वर के पास लाना सीखना होगा। केवल बड़ी बातों को नहीं। केवल आपातकालीन बातों को नहीं। सब कुछ! इसमें आपके चिन्तित विचार, आपकी बेचैन रातें, और आपका भटकता हुआ मन शामिल है। प्रभु हमें ठीक वही बताता है कि हमारे सभी चिन्तित विचारों के साथ हमें क्या करना है, फिलिप्पियों 4:6-7, “किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

तो पौलुस के अनुसार, परमेश्वर की शान्ति सब कुछ स्वयं से समझ लेने से नहीं आती है। वह सब कुछ को नीचे रख देने से आती है। जब आपकी चिन्ताएँ आपके हृदय में उठने लगती हैं और आपके दिमाग की वह छोटी सी आवाज़ आपके डर को दोहराने लगती है, तो आपको स्वयं को याद दिलाने की आवश्यकता है कि परमेश्वर चाहता है कि आप प्रार्थना में उसके पास आएँ। इसलिए नहीं कि उसे पता नहीं कि क्या हो रहा है, बल्कि इसलिए कि आपको याद दिलाया जा सके कि वह कौन है।

प्रार्थना चिन्ता के विरुद्ध आपके युद्ध का हथियार है। जब मार्टिन लूथर को बहुत अधिक आत्मिक विरोध का सामना करना पड़ा, तो वे अक्सर कहते थे, “आओ, हम भजन गाएँ और शैतान को भगाएँ।”

कितनी बार वे गीत जो आप गाते हो, आपको उस सत्य की याद दिलाते हैं जिसे आप अक्सर भूल जाते हो? अच्छे भजनों में कुछ ऐसा होता है जो हमें याद दिलाने में सहायता करते हैं कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है। हमें अपनी चिन्ताओं को प्रचार सुनाने के लिए अच्छे गीतों की आवश्यकता है। जब हमारी भावनाएँ इधर-उधर भटकती रहती हैं, तब अपने विचारों को सही दिशा देने के लिए हमें परखे हुए गीत-शब्दों की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर का आपसे यह वायदा है कि यदि आप अपने बोझों को स्वयं उठाने का प्रयास करने के बजाय उन्हें उसके पास ले आते हैं, और यदि आप घबराहट के स्थान पर प्रार्थना को चुनते हैं, तो आपको शान्ति प्राप्त

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

होगी। क्या आप परमेश्वर की शान्ति का बेहतर अनुभव करना चाहते हो? अधिक गीत गाओ! सचमुच, अधिक गीत गाओ। अपने गीतों को अपनी प्रार्थनाएँ बना दो। गाओ और ऊँचे स्वर से पुकारो, “प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ! मेरे अविश्वास में मेरी सहायता कर!”

क्या आपका पाप चिल्लाकर कह रहा है कि आप दोषी हो? गाओ: “क्योंकि पापरहित उद्धारकर्ता मर गया, इसलिए मेरी पापी आत्मा स्वतंत्र गई।” क्या आप परमेश्वर के प्रेम पर संदेह करने के लिए परीक्षा में पड़ते हो? अपने गोद लिए जाने को स्मरण करें: “मेरा नाम उसके हाथों पर अंकित है, मेरा नाम उसके हृदय पर लिखा है। मैं जानता हूँ कि जब वह स्वर्ग में खड़ा है, कोई जीभ मुझे वहाँ से हटने की आज्ञा नहीं दे सकती है。” क्या आपका अतीत आपको दोषी ठहरा रहा है? इसमें विश्राम पाएँ: “मेरा पाप—ओह, इस शानदार विचार का आनन्द—मेरा पाप, थोड़ा नहीं बल्कि पूरा, क्रूस पर चढ़ा दिया गया है, और मैं इसे अब और नहीं सँहूँगा।”

अच्छे गीतों के द्वारा प्रार्थना करने से आपका हृदय शांत होगा और आप शान्ति से दूर नहीं जा पाएँगे। इसलिए गाओ और निरन्तर प्रार्थना करो।

जो सत्य है उस पर विचार करें

यदि प्रार्थना आपको स्पष्ट देखने में सहायता करती है, तो सत्य पर मनन आपको सही ढंग से चलने में सहायता करेगा। फिलिप्पियों 4:8 “इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो।”

शान्ति की लड़ाई अक्सर मन में जीती या हारी जाती है। आत्मा सत्य का उपयोग करके झूठ को हटाता है। जब आपका मन परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं से नया हो जाता है, तो आपकी आत्मा आराम करना सीखता है; तब भी जब हालात कुछ और ही कह रहे हों।

किन्तु यदि आप अपने मन को चिन्ताओं, संदेहों, और झूठ की सूक्ष्म फुसफुसाहटों से भरने की अनुमति देते हो, तो आप शान्ति का अनुभव करने में संघर्ष करेंगे।

उन वार्तालापों पर विचार करें जो आप अपने साथ करते हो। क्या आपके जीवन के सबसे नकारात्मक व्यक्ति आप स्वयं हो? क्या आप वह आंतरिक आवाज़ सुनते हैं, जो आपको कहती है कि, “आप असफल हो,” या “आप अकेले हो,” या “कोई भी वह नहीं सहता है जो आप सहते हो या वैसा महसूस करता है जैसा आप महसूस करते हो”? झूठ केवल आपके मन के द्वार के बाहर तैरते नहीं रहते हैं; वे वहाँ प्रवेश करके स्थायी रूप से बसना चाहते हैं। शैतान, पाप का आकर्षण, और आपका अपना आत्म-संदेह लगातार यह मनाने का प्रयास करेगा कि परमेश्वर का वचन विश्वासयोग्य नहीं है।

इसी कारण भविष्यवक्ता यशायाह कहता है, यशायाह 26:3 “जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।” परमेश्वर केवल हमारे हृदयों की

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

रक्षा ही नहीं करता है; वह सक्रिय रूप से हमारे मनों की रक्षा करता है। किन्तु ध्यान दें, वह हर मन की रक्षा नहीं करता है; वह केवल उसकी रक्षा करता है जो उस पर टिका रहता है।

यह आकस्मिक रूप से नहीं होता है। आपको इसके लिए लड़ना होगा। आपको जानबूझकर चुनना होगा कि आप किस पर मन लगाते हो। आप परमेश्वर की गहन शान्ति का अनुभव करेंगे और यह आपकी आत्मा में बस जाएगी परन्तु केवल तब जब आप अपने दिमाग में चल रहे झूठ को शांत कर देंगे।

आपके विचार भावनाओं की ओर जाते हैं और वे भावनाएँ कर्मों की ओर ले जाती हैं। शांत, असुरक्षित क्षणों में आप जो विश्वास करते हैं, वही गहराई से यह आकार देगा कि आप अराजकता आने पर कैसे प्रतिक्रिया करते हो। यदि आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर दूर है, तो आप त्यागे हुए और अकेला महसूस करेंगे। किन्तु यदि आप सचमुच विश्वास करते हैं कि वह एक निश्चित और स्थिर लंगर है, तो आपकी आत्मा स्थिर हो जाएगी। शान्ति केवल सकारात्मक सोच से नहीं बढ़ती है—यह ठोस सत्य से बढ़ती है।

आप अपने जीवन में परमेश्वर की शान्ति का और अधिक अनुभव कैसे कर सकते हो? सब बातों के बारे में प्रार्थना करें और नियमित रूप से उस पर मनन करें जो सत्य है।

जो जानते हैं उसका अभ्यास करें

फिलिप्पियों 4:9, “जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।” शान्ति केवल उन लोगों के लिए वायदा नहीं है जो विश्वास करते हैं, परन्तु उन लोगों के लिए है जो आज्ञा को मानते हैं। सत्य को जानना एक बात है—उसे जीना दूसरी बात है।

भजन 119:165 “तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।” यहाँ मान्यता यह है कि परमेश्वर के वचन से प्रेम करने का परिणाम उसके वचन की आज्ञा का पालन करना है। और जो लोग परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं और उसके अनुसार जीते हैं, वे शान्ति का अनुभव करते हैं। मामूली शान्ति नहीं, परन्तु “बड़ी” शान्ति। बहुतायत वाली शान्ति। स्थिर और हमेशा रहने वाली शान्ति।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि कौन शान्ति का अनुभव करता है। अधर्मी नहीं। किन्तु वे जो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम रखते हैं—केवल कर्तव्य से पालन करना नहीं, परन्तु हृदय से उसमें आनन्द लेना। भजन 1:2 “परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।”

परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करना परमेश्वर की वाणी से प्रेम करना है, परमेश्वर के मार्गों से प्रेम करना है, और परमेश्वर की इच्छा से प्रेम करना है। जो लोग ऐसा नहीं करते हैं वे शान्ति नहीं पा सकते हैं। मेरी पत्नी ने मुझसे जो सबसे गहरी बातें कही हैं, उनमें से एक यह है कि, “स्वच्छ विवेक होने से अधिक संतोषजनक कुछ नहीं है।” वह बिलकुल सही है। जब विवेक स्पष्ट होता है तब शान्ति सबसे स्वतंत्र रूप से बहती है। आप छिपे हुए पाप को थामे रखकर एक स्थिर आत्मा की आशा नहीं कर सकते हो। आप जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञाओं

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

को अनदेखा करके सच्चे मन से परमेश्वर की शान्ति नहीं माँग सकते हैं। अवज्ञा हमेशा शान्ति को भंग करती है, इसलिए नहीं कि परमेश्वर अपना प्रेम वापस लेता है, परन्तु क्योंकि पाप आपके आत्म-विश्वास को धुंधला कर देता है और परमेश्वर के साथ आपकी संगति में दूरी पैदा करता है।

पाप हमेशा अधिक वायदा करता है और गहराई से निराश करता है। यह आपको थोड़ी देर के लिए राहत का वायदा करके लुभाता है, फिर आपको गहरी बेचैनी में छोड़ देता है। उस समय यह आज़ादी जैसा लग सकता है, परन्तु यह धीरे-धीरे आपकी आत्मा का गला घोट देता है। जब समझौता आपके भीतर घुस आता है, तब आपकी शान्ति टायर में हवा की तरह धीरे-धीरे निकल जाती है। दूसरी ओर, आज़ाकारिता आरम्भ में किसी बात की माँग कर सकती है—एक समर्पण, एक कठिन चुनाव. . . परन्तु वह निरन्तर आपको सच्ची शान्ति, स्पष्टता और परमेश्वर के साथ गहरे संबंध की ओर ले जाती है।

और स्मरण रखें, पवित्रता में बढ़ना पूर्णता नहीं है - यह दिशा है। यह एक ऐसा हृदय है जो सक्रिय रूप से तब सुनता है जब परमेश्वर बोलता है, जब वह दोषी ठहराता है तो सच में मुड़ता है, और जब वह बुलाता है तो विश्वासयोग्यता के साथ आता है।

आज्ञाकारिता यह घोषणा करती है, “प्रभु, मेरा मार्ग नहीं, परन्तु तेरा मार्ग।” अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के समक्ष झुकाना आपको शान्ति नहीं देगा; परन्तु यह उसे सक्रिय रूप से आमंत्रित करेगा। शान्ति हमारे प्रदर्शन का प्रतिफल नहीं है—यह परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति का स्वाभाविक फल है।

इसलिए, यदि आपके जीवन में शान्ति की कमी है, तो शायद कुछ लेखा-जोखा करने का समय है। यदि आप पाप को लाड़-प्यार कर रहे हो और सुधार से इनकार कर रहे हो तो आपको आराम की कमी होगी। परमेश्वर की शान्ति वास्तव में उन लोगों पर ठहरती है जो सक्रिय रूप से शान्ति के परमेश्वर के साथ चलते हैं। यदि आप विश्वास और आज्ञाकारिता में चल रहे हो तो आपकी आत्मा वायदा किया हुआ विश्राम पाएगी।

विचार के लिए प्रश्न

1. जब चिंता होती है, तो आप आम तौर पर सबसे पहले कहाँ भागते हैं - प्रार्थना करने या घबराने के लिए?
2. परमेश्वर के वचन में ऐसी कौन-सी सच्चाइयाँ हैं जिन्हें आपको अधिक बार दोहराना चाहिए?
3. क्या कोई छिपा हुआ पाप है जो परमेश्वर के साथ आपकी शान्ति को बाधित कर रहा है?
4. यह कहने का क्या अर्थ है कि शान्ति एक व्यक्ति है, न कि केवल एक भावना?
5. क्या आपने मसीह पर अपनी शान्ति के रूप में भरोसा किया है? यदि ऐसा है, तो यह कठिनाइयों को देखने के आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलता है?

3

शान्ति के परमेश्वर का आनन्द कैसे लें

उस महान मार्शल आर्ट्स फिल्म, कंग फू पांडा में एक दृश्य है जहाँ मास्टर शीफू पो की सहायता कर रहे होते हैं कि वह केन्द्रित हो और आन्तरिक शान्ति पाए। पो एक चेरी ब्लॉसम के वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान लगाने की स्थिति में स्वयं को रखता है और कहता है, “ठीक है, हे ब्रह्माण्ड, मुझे कुछ मार्गदर्शन दो।” फिर वह मंत्र दोहराता है: “इनर पीस... इनर पीस... इनर पीस...” अर्थात् आन्तरिक शान्ति, परन्तु उसका मन भटकने लगता है और उसका “इनर पीस” बदलकर “डिन्नर, प्लीज” बन जाता है, फिर “डिन्नर विद पीज़” फिर “झो पीज़... सेसमी सोया ग्लेज़ के साथ!”

मुझे लगता है कि हम सब पो से जितना जुड़ना चाहते हैं, उससे कहीं ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं। प्रार्थना करते या बाइबल पढ़ते समय हमारा मन अक्सर भटक जाता है। और यदि आप मेरे और पो जैसे हैं... तो शायद यह अगली चीज़ की ओर भटक रहा है जिसे आप अपने पेट में डालने की योजना बना रहे हैं। हो सकता है कि हम अच्छे इरादे से शुरुआत करें। हम अपने हृदय को शांत करते हैं और सच्चाई से प्रार्थना करते हैं। किन्तु जल्द ही हम जीवन के विचलनों में खिंचे चले जाते हैं। समय-सारिणियाँ, सूचनाएँ, चिंताएँ, महत्वाकांक्षाएँ। शान्ति की हमारी आकांक्षा नियंत्रण या आराम की हमारी भूख द्वारा छीन ली जाती है।

किन्तु यहाँ अच्छी खबर है: परमेश्वर की शान्ति कुछ ऐसी नहीं है जिसे हम उत्पन्न करते हैं। यह कुछ ऐसी है जो हमें उसका आनन्द लेने से प्राप्त होती है। मसीह के बिना, कोई संगति नहीं है, कोई निकटता नहीं है, कोई परमेश्वर की शान्ति का आनन्द नहीं है। यही कारण है कि उसके लहू द्वारा शान्ति स्थापित हुई (कुलु. 1:20), और उसी में बने रहने द्वारा हम उस शान्ति की आनन्द और विश्राम का अनुभव करते हैं।

इसी के साथ अब हम अपना ध्यान P.E.A.C.E. इस संक्षिप्त रूप की ओर लगाते हैं, ताकि परमेश्वर के साथ चलने के सम्बन्धात्मक और अनुभवात्मक आनन्द को अधिक सरलता से स्मरण रख सकें। यह संक्षिप्त रूप हमें पाँच प्रकार बताता है जिनके द्वारा हम शान्ति के परमेश्वर का आनन्द ले सकते हैं।

अर्थात् मसीह की उपस्थिति का अनुसरण करें

भजनसंहिता 16:11, “तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरि है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।” इस पद में दाऊद यहोवा से प्रार्थना कर रहा है, जो अपनी वाचा निभाने वाला परमेश्वर है। सम्पूर्ण भजन में आप दाऊद की परमेश्वर के साथ घनिष्ठता सुन सकते हैं। वह अनुमान नहीं लगा

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

रहा; उसे यहोवा पर पूर्ण भरोसा है। वह किस बात पर निश्चित है? यह कहता है कि यहोवा उसे जीवन का रास्ता दिखाएगा। “दिखाएगा” क्रिया-शब्द प्रकाशन, मार्गदर्शन और शिक्षा का संकेत देता है। परमेश्वर दूरस्थ या मीन नहीं है। वह व्यक्तिगत रूप से और विशेष रूप से दाऊद को मार्ग दिखा रहा है। यह ऐसा नहीं है मानो कि परमेश्वर केवल संकेत दे रहा हो और दिशा दे रहा हो। इसके बजाय, परमेश्वर मार्ग दिखा रहा है और पथ को प्रकाशित कर रहा है ताकि दाऊद सीधे से चल सके।

एकमात्र तरीका जिससे आप सुनिश्चित हो सकते हो कि आप सही पथ पर हो, वह परमेश्वर की उपस्थिति में चलना है। जब दाऊद कहता है “तेरी उपस्थिति में” इसे शाब्दिक रूप से पढ़ा जाता है “तेरे मुख के सामने।” यह परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत, संबंधपरक निकटता है। यह परमेश्वर का कोई अस्पष्ट विचार नहीं है बल्कि परमेश्वर के साथ वास्तविक निवास—परमेश्वर के निकट होना है।

मुझे याद है कि एक दिन मेरे कॉलेज के बास्केटबॉल कोच में से एक ने टाइम आउट के दौरान मुझ पर गुस्सा निकाला क्योंकि उसे लगा कि मैं डिफेंस में आलसी हो रहा हूँ। वह मेरे मुँह पर आया और बोला, “पेपरमिट।” मैंने कहा, “क्या?” उसने कहा, “पेपरमिट। तुम इसी तरह का गम चबा रहे हो। मैं चाहता हूँ कि आप नम्बर 10 के इतने कड़ीब हों कि आपको पता चल जाए कि वह कौन-सा गम चबा रहा है। आपको उसके बिल्कुल मुँह के सामने आ जाना होगा। मैं चाहता हूँ कि दर्शक-दीर्घा में बैठी उसकी प्रेमिका आपके उसके इतने कड़ीब होने पर ईर्ष्या करे। उसके बिलकुल सामने आ जाओ!!”

मेरा मानना है कि यदि हमारा परमेश्वर से आमने-सामने वाला संबंध और गहरा होता, तो हम और भी अधिक आनन्दित मसीही होते।

भजन संहिता 16:11 पर फिर से विचार करें। परमेश्वर के साथ इस “आमने-सामने” बातचीत का क्या नतीजा होता है? भजनकार गाता है, “तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है!” ध्यान दें कि भजन लिखने वाला यहाँ पूरी तरह से होने की भावना बताता है। “भरपूरी” शब्द का अर्थ है बहुतायत, संतुष्टि, पूर्ण संतोष; कोई कमी नहीं है। आप यकीन रख सकते हैं कि परमेश्वर जो कुछ भी देता है, उसमें कोई कमी या अधूरापन नहीं है।

यदि आप संसार में सुख का पीछा कर रहे हैं, तो आप पाएँगे (यदि आपने अभी तक नहीं पाया है!) कि वह हमेशा आपसे तेज़ भागेगा। किन्तु यहाँ, भजनकार हमारे साथ ऐसा आनन्द बाँटता है जो हमसे दूर नहीं भागता, बल्कि हमारे पास आता है। परमेश्वर की उपस्थिति किसी क्षणिक बूढ़ा-बाँदी के समान नहीं है जो बस आकर चली जाती है; यह उस जीवित जल के स्रोत के समान है जो कभी सूखता नहीं है। यह गहरी, आत्मा को झकझोर देनेवाली संतुष्टि प्रदान करती है—जो स्थिर रहती है और उमड़कर बहती रहती है।

भजनकार इस प्रचुरता को इस प्रकार व्यक्त करता है, भजन 4:7 “तू ने मेरे मन में उस से कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता था।” यीशु आनन्द के स्रोत और प्रदान की गई आनन्द की मात्रा के बारे में और भी स्पष्टता यूहन्ना 15:11 में प्रदान करता है, “मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।” हमारा आनन्द उसके

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

आनन्द में पूरा, सम्पूर्ण और सिद्ध होता है। यीशु हमारे साथ अपना स्वयं का पूर्ण, अलौकिक, अनन्त आनन्द बाँटता है।

यह परमेश्वर का हमारे प्रति अद्भुत वायदा है: रोमियों 14:17, “क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और मेलमिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।”

भजन 16:11 के निष्कर्ष पर विचार करें, “तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।”

भजन 16:11 हमें स्मरण कराता है कि मसीही के रूप में हमारा अपना व्यक्तिगत आनन्द का माप नहीं है, बल्कि हमें उस स्रोत तक पहुँच प्राप्त है जो अनन्त आनन्द प्रदान करता और उसे स्थिर बनाए रखता है।

एक बार मूसा ने कहा था, “यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा” (निर्गमन 33:15)। बाद में पतरस ने यही भाव प्रकट किया, “हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।” मूसा और पतरस दोनों निरंतर रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहते थे। वे दोनों समझ गए थे कि उनका सबसे बड़ा आनन्द वहीं है जहाँ परमेश्वर है।

शान्ति के परमेश्वर का आनन्द लेने के लिए आपको सर्वप्रथम और सर्वोपरि उसकी उपस्थिति की अभिलाषा रखनी होगी। शान्ति का अनुभव वास्तव में आपका मुख्य लक्ष्य नहीं है। मसीह की उपस्थिति ही आपका मुख्य लक्ष्य है। जब हम मसीह की निकटता को प्राथमिकता देते हैं, तब हम अपने आप को उसकी शान्ति ग्रहण करने के लिए उस स्थान पर रखते हैं, वह शान्ति जो उसके स्वयं के अस्तित्व से प्रवाहित होती है।

अतः, हमें दो खतरों से सचेत रहना चाहिए जो हमारी शान्ति को भंग करना चाहते हैं: दूरी और विचलन। इसका उदाहरण हमें मरियम और मार्था की घटना में दिखाई देता है। मार्था इतनी अधिक विचलित हो गई थी कि वह मसीह से दूर होती चली गई। जितना वह उसकी उपस्थिति से हटती गई, उतनी ही अधिक अशांत होती गई। वह शान्ति में नहीं थी। इसके बजाय वह चिन्तित थी, और उसकी चिन्ता ने उसकी बहन के साथ उसके संबंध में भी खटास उत्पन्न कर दी। उसने आन्तरिक और बाहरी, दोनों प्रकार की शान्ति खो दी थी। मरियम इसके विपरीत पूर्ण शान्ति में थी। उसने उत्तम भाग को चुन लिया था—मसीह के समीप रहना, उसके चरणों में बैठकर।

सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में हम पढ़ते हैं कि जब हम मसीह के निकट आते हैं तो हमें बड़ा प्रतिफल मिलता है।

याकूब 4:8 वायदा करता है, “परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।” हमें यहाँ तक बताया गया है कि हमें किस प्रकार निकट आना है। इब्रानियों 10:22 प्रेरित करता है, “तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ।” मसीह के द्वारा, हमारे पास शान्ति के परमेश्वर के निकट आने का निर्भीक मार्ग है।

हम परमेश्वर के निकट कैसे आएँ? एक खरे हृदय और दृढ़ विश्वास के साथ। प्रतिदिन बाइबल का अनुशासित रीति से आहार लेना निश्चय ही एक बुद्धिमान अभ्यास है। किन्तु परमेश्वर के साथ सहभागिता केवल आपकी

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

सुबह की कॉफी और एक भक्तिमय पाठ के नियम से कहीं बढ़कर है। अपनी दैनिक भक्ति के कर्तव्य को पूरा करके यीशु को बहुत शीघ्र अपनी 'करने वाली सूची' से बाहर न करें। उसकी उपस्थिति में अधिक देर ठहरें। यह सुनिश्चित करें कि आप निर्बाध प्रार्थना और शांत मनन-चिन्तन के लिए समय निकाल रहे हैं। मुख्य बात गुणवत्तापूर्ण संगति है। शलु यह अच्छी तरह जानता है कि जितने अधिक व्यस्त आप होंगे, उतना ही कम आत्मिक आनन्द और शान्ति आप अनुभव करेंगे।

हमें अपने हृदयों को उसकी सुंदरता से मोहित होने के लिए समय देना आवश्यक है। शान्ति के परमेश्वर का सचमुच आनन्द लेने के लिए हमें अपनी दृष्टि ऊपर उठानी है और मसीह की महिमा में आनन्दित होना है।

अर्थात् मसीह की महिमा में आनन्द करें

हम महिमा को देखने के लिए बनाए गए हैं, और परमेश्वर की सर्वोच्च महिमा यीशु मसीह के चेहरे से प्रकट होती है। 2 कुरिन्थियों 4:6 इसे इस प्रकार बताता है: “इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, “अन्धकार में से ज्योति चमके,” और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।” यूहन्ना 1:14 भी बताता है कि परमेश्वर की महिमा हमारे लिए मसीह में प्रकट हुई: “और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।”

हर प्रचार जो आप सुनते हैं, हर भजन जो आप गाते हैं, और हर वचन जो आप मनन करते हैं, वह मसीह की चमक को देखने का एक नया तरीका होना चाहिए। जितना स्पष्ट रूप से हम मसीह की महिमा देखते हैं, उतना ही हमारे हृदय शान्ति में शांत होते हैं। उसकी महिमा हमें स्थिर रखती है। उसकी महिमा हमारी दृष्टि को सांसारिक छायाओं से ऊपर उठाती है और हमें स्मरण कराती है कि हमारा आनन्द यीशु की अपरिवर्तनीय शोभा में निहित है।

हम उसी को प्रतिबिम्बित करते हैं जिस पर हमारा ध्यान टिके रहता है। यदि हम अपनी दृष्टि यीशु पर लगाए रखें, तो उसका स्वभाव हमारी शांत, स्थिर, आत्मविश्वास में देखा जाएगा — उसकी शान्ति की उपस्थिति।

अर्थात् मसीह के वचन में बने रहें

आप मसीह की महिमा में आनन्दित नहीं हो सकते हैं जब तक कि आप मसीह के वचन में न बने रहें। यीशु ने स्वयं कहा, “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा” (मत्ती 4:4)। जिस प्रकार शरीर बिना दैनिक रोटी के फलित नहीं हो सकता है, ठीक उसी प्रकार आत्मा बिना दैनिक वचन में संगति के दिशाहीन और फलहीन है। यीशु ने कहा, “मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले” (यूहन्ना 16:33)। यीशु के वचन शान्ति के साधन हैं। उसके वचन हमारी भावनाओं को स्थिर करते हैं, हमारे विचारों को लंगर देते हैं और हमारी इच्छाओं को आकार देते हैं। ऐसे संसार में जहाँ आपका मन हजारों दिशाओं में खींचा जाता है, मसीह के वचन में बना रहना स्पष्टता, स्थिरता और विश्राम प्रदान करता है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

पौलुस इस संबंध को कुलुस्सियों 3:15-16 में मसीह की शान्ति और मसीह के वचन के साथ जोड़ता है, “मसीह की शान्ति जिसके लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे; और तुम धन्यवादी बने रहो। मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।”

जब मसीह का वचन मन में समृद्धि से वास करता है तब मसीह की शान्ति हृदय में राज करती है। परमेश्वर के वचन के अलावा कोई और चीज संसार के शोर को असरदार तरीके से हटाकर आपका ध्यान शान्ति और स्वतंत्रता लाने वाले सच पर नहीं लगा सकती है (यूहन्ना 8:31-32)।

पवित्रशास्त्र एक सुदृढ करने वाली शान्ति लाता है—एक ऐसी शान्ति जो कठिनाई में भी ठोकर नहीं खाती है। क्या आप ऐसी स्थिरता की लालसा रखते हैं जो परिस्थितियों की हवाओं के साथ डगमगाए नहीं? पवित्रशास्त्र का गहराई से अध्ययन करें, केवल बॉक्स पर चेक का निशान लगाने के लिए नहीं, परन्तु मसीह के साथ संगति करने के लिए। इस अद्भुत वायदे को सुनें: यूहन्ना 15:7 “यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।” बने रहना का अर्थ है, ठहरना, निवास करना, जीना। यीशु नहीं चाहता कि हम केवल खिड़की से खरीददारी करें, वह चाहता है कि हम वचन में निवास ग्रहण कर लें।

जितना अधिक हम वचन में स्थिर रहते हैं, उतना ही वह हमारे दृष्टिकोण को रूप देता है। जितना अधिक हम संसार को उसकी दृष्टि से देखते हैं, उतना ही वह हमारे स्नेह और आकांक्षाओं को प्रज्वलित करता है। और परिणाम क्या होता है? हमारी इच्छाएँ और हमारी लालसाएँ उसकी अपनी इच्छाओं के साथ सामंजस्य में आ जाती हैं। और जब वह उन इच्छाओं को पूरा करता है, तब हम उसकी आशीषों का अनुभव करते हैं।

पवित्र शास्त्र में गहरी, बिना जल्दबाजी के गहराई की लय बनाएँ। धीरे-धीरे पढ़ें। गहराई से मनन करें। विश्वासयोग्यता के साथ कंठस्थ करें। वचन को अपने अंदर गहराई से बसने दें क्योंकि जहाँ उसका वचन है, वहाँ उसकी उपस्थिति पता चलती है और उसकी शान्ति महसूस होती है।

अर्थात् मसीह के लोगों के साथ सहभागिता रखें

परमेश्वर की शान्ति केवल निजी आनन्द के लिए नहीं दी गई है। परमेश्वर चाहता है कि वह शान्ति संगति में फलित हो। शान्ति के परमेश्वर का अधिक पूर्ण आनन्द लेने के लिए, हमें शान्ति के लोगों के साथ संगति में चलना चाहिए। शान्ति का परमेश्वर हमें निजी शान्ति के लिए नहीं बुलाता है, बल्कि साझा शान्ति के लिए बुलाता है।

हमारे युग का एक बड़ा झूठ यह है कि शान्ति लोगों से दूरी बनाकर ही मिलती है। किन्तु बाइबल-आधारित शान्ति गहराई से संबंध पर आधारित है। यदि आप उन लोगों के साथ निकटता से नहीं चलते हैं जो, आपके समान, मसीह के लहू द्वारा मसीह से एक हो गए हैं, तो आप परमेश्वर की शान्ति का पूरा आनन्द नहीं ले सकते

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

हैं। यदि आप मसीह के साथ आपने-सामने होना चाहते हैं, तो आपको उसके शरीर के साथ आमने-सामने होना होगा — कलीसिया के साथ।

इसे मैं इस प्रकार स्पष्ट करता हूँ। मैं अपने जन्म से लेकर का प्रशंसक हूँ। आप कह सकते हैं यह मेरे खून में है। मैं तब भी लेकर खेलों में गया था, जब मैं अभी माँ के गर्भ में था। जब मैं लेकर के बारे में बोलता हूँ, मैं “द लेकर” नहीं कहता, मैं कहता हूँ “मेरे लेकर।” मैं कहता हूँ, “हमारे” पास 17 चैंपियनशिप हैं। मैं कहता हूँ, “हमने”—न कि सेल्टिक्स ने—अब तक की सबसे प्रसिद्ध टीमों को एकत्रित किया है। पहचान इतनी गहरी है। किन्तु मैं अब लॉस एंजेलिस में नहीं रहता हूँ। मैं अब वारियर क्षेत्र में रहता हूँ। इसलिए जब मैं किसी को सड़क पर बैंगनी और सुनहरा पहनकर चलता देखता हूँ, तो तुरन्त एक जुड़ाव होता है— एक मुट्ठी बाँधना, एक सिर हिलाना, शायद मैजिक या कोबे के गौरव दिनों की पूरी बातचीत की याद। पूर्ण अपरिचित भी पुराने मित्र जैसे लगते हैं क्योंकि हमारी निष्ठा एक समान है। यह साझा वफ़ादारी पर आधारित संगति है।

अब, यदि यह अस्थायी और तुच्छ बात के संबंध में सच है जैसे मेरा पसंदीदा बास्केटबॉल टीम, तो मसीह में एक हुए मसीही लोगों के लिए यह कितना अधिक सच होना चाहिए? हम केवल एक ही टीम के लिए उत्साह नहीं जता रहे हैं—हमें उसी उद्धारकर्ता द्वारा छुटकारा दिया गया है, उसी देह में बपतिस्मा दिया गया है, और उसी पिता द्वारा दत्तक बनाया गया है। हम केवल एक जर्सी साझा नहीं करते हैं—हम मसीह को ही साझा करते हैं। हम किसी फ्रैंचाइज़ी के प्रति वफ़ादारी से नहीं बंधे हैं, बल्कि क्रूस के लहू से बंधे हैं। अतः जब आप एक स्थानीय कलीसिया में एक मसीही के रूप में प्रवेश करते हैं, तो आप अजनबियों की भीड़ में नहीं जाते हैं—आप एक पारिवारिक मिलन में प्रवेश करते हैं। वह वृद्ध पुरुष जिसे आप मुश्किल से जानते हैं, वह आपका भाई है। वह युवा स्त्री आपकी बहन है।

क्रूस सिर्फ ऊपर से नीचे आने वाली शान्ति ही नहीं बनाता है, यह एक-दूसरे के लिए शान्ति भी बनाता है। नया नियम यह स्पष्ट रूप से बताता है—यीशु ने सिर्फ हमारा परमेश्वर से मेल-मिलाप नहीं कराया; उसने हमें एक दूसरे से भी मेल कराया। इफिसियों 2:14, “क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया।”

पहली शताब्दी के संसार में, शायद ही कोई विभाजन इतना गहरा रहा हो जितना यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की शत्रुता। किन्तु पौलुस यहाँ यीशु के विषय में एक आश्चर्यजनक बात प्रकट करता है: “वही हमारा मेल है।” वह यह नहीं कहता है कि यीशु मेल लाता है, या वह मेल सिखाता है, बल्कि वह स्वयं वह व्यक्ति है जो मेल को मूर्त रूप देता है और स्थिर करता है। वह मेल का व्यक्तिकरण है। यीशु ने “दोनों को एक कर दिया।” यह अलौकिक है। वह अपने आप में एक नई मनुष्यत्व को उत्पन्न करता है (इफिसियों 2:15)। हमारी एकता कोई समझौता नहीं है, बल्कि यह एक नई सृष्टि है।

अब क्रूस के इस पार, पौलुस कह सकता है: गलातियों 3:28, “अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।”

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

यदि मसीह ने विभाजन की दीवार को ढा दिया है, तो कलीसिया इस बात का प्रमाण है कि वह दीवार वास्तव में मिट चुकी है। कलीसिया केवल शान्ति की प्राप्तकर्ता ही नहीं है, वह शान्ति का प्रदर्शन भी है। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया यह दृश्यमान घोषणा है कि मसीह का मेल-मिलाप कराने वाला कार्य सत्य और वास्तविक है।

नीचे दिए गए पदों पर विचार करें:

इफिसियों 4:3 “और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।” फिलिप्पियों 2:1 “... और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है।” रोमियों 14:19 “इसलिये हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेलमिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।”

हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ सम्बन्ध बहुत खोखले हो गए हैं। आप आज बिना कभी कलीसिया में प्रवेश किए, या बिना किसी वास्तविक सम्बन्ध में जुड़े, अच्छे उपदेश, पाँडकास्ट और आराधना-संगीत तक पहुँच सकते हैं। परन्तु परमेश्वर की योजना केवल यह नहीं कि आप जानकारी प्राप्त करें, बल्कि यह है कि आप समुदाय में परिवर्तित हों।

इब्रानियों 10:24–25 प्रोत्साहित करता है, “और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।” प्रेरितों 2:46-47, “वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधार्ई से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।”

मसीह के लोगों के साथ संगति कोई वैकल्पिक विषय नहीं है—यह शान्ति के परमेश्वर का आनन्द लेने के लिए अत्यावश्यक है। कलीसिया वह स्थान है जिसमें हम प्रेम, उत्तरदायित्व, सेवा, आनन्द और पारस्परिक उत्साह में जड़ पकड़ते हैं और बढ़ते हैं। यह पृथ्वी पर और कहाँ सम्भव है? पृथ्वी पर और कौन-सी बात ऐसी सामर्थ्य रखती है कि शत्रुओं को लेकर उन्हें परिवार बना दे? सुसमाचार के अतिरिक्त और ऐसा क्या है जो इतनी नाटकीय विविधता में से ऐसी पूर्ण एकता उत्पन्न कर सके?

मसीह कलीसिया में केवल हमें एक-दूसरे को सह लेने की क्षमता ही नहीं देता है। वह एक गहरी, आनन्दपूर्ण, बलिदानी, सुसमाचार-निहित शान्ति उत्पन्न करता है जो एकता बनाती है। राजनीति और नीतियाँ ऐसी शान्ति उत्पन्न नहीं कर सकती हैं। केवल मसीह के बहुमूल्य लहू में वह सामर्थ्य है।

अर्थात् सब कुछ मसीह की देखभाल को सौंपें

जब हम परमेश्वर के लोगों के साथ संगति में चलते हैं, हम साझा शान्ति से मिलने वाले आनन्द और स्थिरता का स्वाद चखते हैं। किन्तु समुदाय में भी, हमारे हृदय चिन्ता और भय से जूझते रहते हैं। इसलिए यदि हमें

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ

निरंतर शान्ति के परमेश्वर का आनन्द लेना है, तो हमें सीखना होगा कि सब कुछ मसीह के प्रभुता सम्पन्न हाथों में सौंप दें।

यदि आप परमेश्वर को नियंत्रित करना चाहते हैं, तो परमेश्वर का आनन्द लेना आपके लिए कठिन होगा। मुझे नहीं लगता कि कोई यह स्वीकार करेगा कि वह परमेश्वर को नियंत्रित करना चाहता है, परन्तु हम सब अपने हालातों को नियंत्रित करना चाहते हैं। हम लोगों और परिणामों को नियंत्रित करना चाहते हैं। हम भविष्य को नियंत्रित करना चाहते हैं। और फिर भी इस स्तर का नियन्त्रण हमारे लिए असम्भव है। वास्तव में, मसीह के पास आना ही इस नियंत्रण के भ्रम को समर्पण करना है। शान्ति के परमेश्वर का आनन्द लेने के लिए, आपको अपनी सारी चिन्ताएँ मसीह पर डालनी हैं, और उन्हें वहीं छोड़ देना है।

यीशु हमारी शान्ति का एकमात्र स्रोत और सार्वभौम पालनकर्ता है। वह सृष्टि को अपने हाथों में थामे हुए है और वह आपका भविष्य, आपके भय, आपका परिवार, आपके मित्र, आपकी वित्तीय स्थिति और वह सब कुछ थामे है जो आपके मन में आता है। जब आप इस यीशु पर भरोसा करते हो, तो शान्ति आपको घेर लेती है। जब आप “क्या होगा अगर” का अभ्यास छोड़कर “जो है” में आनन्द मनाना आरम्भ करते हो, तो आपकी आत्मा विश्राम पाएगी।

यीशु की सेवकाई के दौरान चेलों के भय का अनुसरण करना अत्यन्त रोचक है। सुसमाचारों में बार-बार चले भय, चिन्ता या भ्रम के कारण अशान्त दिखाई देते हैं। उनकी शान्ति का अभाव इस कारण नहीं था कि मसीह अनुपस्थित था, बल्कि इसलिए था क्योंकि वे उस पर भरोसा करने में असफल रहे। चाहे आँधियों का भय हो, भोजन की कमी, कष्ट, सताव, या किसी भी प्रकार की अनिश्चितता—उनके व्याकुल हृदय मसीह में आत्मविश्वास की कमी को प्रकट करते थे। वे उसके सामर्थ्य, उसके प्रबन्ध, उसकी बुद्धि, उसकी उपस्थिति, या उसकी योजना पर संदेह करते थे। हर परिस्थिति में यीशु ने उन्हें कोमलता से सुधारा; केवल उनकी समस्या हल करके नहीं, परन्तु अपने विषय में और अधिक प्रकट करके। मुख्य सबक यह है कि: शान्ति बदली हुई परिस्थितियों से नहीं, वरन् मसीह के चरित्र पर बढ़ते हुए विश्वास से आती है। शान्ति के परमेश्वर का आनन्द लेने के लिए हमें अपने आप को पूर्णतः यीशु मसीह के हाथों में सौंपना होगा। 1 पतरस 5:7 “अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।”

“डालना” का अर्थ किसी वस्तु को अपने ऊपर से उछाल देना, उसे निश्चयपूर्वक अपने आप से दूर फेंक देना है। यह एक सशक्त, जीवंत क्रिया है जो एक सचेत रूप से किए गए त्याग के कार्य को दर्शाती है। शान्ति का परमेश्वर हमें यह आग्रह करता है कि हम अपने बोझों को उसके सामर्थी कन्धों पर उछाल दें। भजन 55:22 “अपना बोझ यहीवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा।”

पतरस हमें बताता है कि हम अपनी सारी चिन्ताएँ यीशु पर डाल सकते हैं—हर फिक्र, हर चिन्ता, हर व्याकुलता, हर वह बात जो आपके मन को बाँट देती है या आपके हृदय को विचलित कर देती है। वह सब कुछ जो आपको रात भर जगाए रखता है। आपको अपनी भावनाओं को अपने बल पर सँभालने की आवश्यकता नहीं है। आप अपनी सारी वास्तविक और कच्ची भावनाओं को लेकर मसीह पर डाल सकते हैं, क्योंकि—“वह आपकी चिन्ता करता है।”

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

यह उस आज्ञा का आधार है। हम अपनी सारी चिन्ताएँ उस पर क्यों डालें? क्योंकि वह परवाह करता है। कोई साधारण, सतही रुचि के साथ नहीं, बल्कि जागरूक, ध्यानपूर्वक, सतर्क देखभाल के साथ—“आप के लिये।” वह केवल सामान्य समस्याओं की परवाह नहीं करता; वह विशेष रूप से आपकी परवाह करता है। आप अपनी चिन्ता को किसी खाली स्थान में नहीं फेंक रहे—आप उसे उस परमेश्वर को सौंप रहे हैं जो आपसे प्रेम करता है, आपको देखता है, आपको जानता है, और आपके बोझों को उठाता है। आपके जीवन का कोई भी विवरण इतना छोटा नहीं है कि उसकी प्रेमभरी देखभाल उससे अछूती रह जाए।

परमेश्वर की शान्ति और उसे कैसे पाएँ



निष्कर्षः

परमेश्वर की शान्ति वास्तविक है, और आप उसे जान सकते हो

हमने देखा है कि नदी के समान शान्ति किसी मानसिकता या मनोभाव में नहीं मिलती है, बल्कि एक व्यक्ति में मिलती है। यीशु मसीह में हम केवल शान्ति ही प्राप्त नहीं करते हैं, बल्कि स्वयं शान्ति के परमेश्वर को प्राप्त करते हैं।

फ्रांसेस हेवरगल इस सत्य पर विश्वास करती थीं। उन्होंने अपने प्रसिद्ध भजन 'महिमाममयी नदी के समान' के शब्द किसी सुविधा-पूर्ण स्थान से नहीं, बल्कि मसीह की सेवा में पूर्णतः उँडेल दिए गए जीवन के बीच लिखे। उनके अन्तिम दिनों पर शारीरिक दुर्बलता की मुहर थी, फिर भी उनकी आत्मा यथासम्भव दृढ़ थी। केवल बयालीस वर्ष की आयु में, अपने मृत्युशय्या पर लेटी हुई, उनके एक चिकित्सक ने कमरे से जाते समय उनसे कहा, "अलविदा, मैं आपको फिर नहीं देख पाऊँगा।"

उन्होंने कहा, "तो आप सचमुच सोचते हो कि मैं जा रही हूँ?" उसने उत्तर दिया, "हाँ।"

"आज?"

"संभवतः।"

"सुन्दर," उन्होंने कहा, "यकीन ही नहीं होता कि यह सच हो सकता है।"

थोड़ी देर बाद उन्होंने मुस्कराते हुए ऊपर देखा और कहा, "स्वर्ग के फाटकों के इतना निकट होना कितना अद्भुत है!" उन्होंने अपने भाई से कुछ भजन गाने को कहा, फिर उन्होंने उनसे कहा, "आपने राजा के बारे में बहुत बात की है और लिखा है, और आप शीघ्र ही उसकी शोभा को देखोगी।"

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

उन्होंने उत्तर दिया, “यह अद्भुत है! मुझे लगता था वह मुझे यहाँ बहुत देर तक रहने देगा; परन्तु वह इतना भला है कि अब ही मुझे ले ले।”

कुछ देर बाद उन्होंने धीरे से कहा, “आओ, प्रभु यीशु, आओ और मुझे ले चलो।” और फिर उन्होंने अपना एक भजन गाया:

यीशु, मैं तुझ पर भरोसा करूँगी,

अपने प्राण के साथ तुझ पर भरोसा करूँगी:

दोषी, खोया हुआ, और लाचार को,

तुने मुझे पूर्ण किया है:

स्वर्ग में,

या पृथ्वी पर, तेरे जैसा कोई नहीं है;

तू पापियों के लिए मरा है,

इसलिए, हे प्रभु, मेरे लिए।

यह विश्वासी का आनन्द है; केवल यह नहीं कि हमें शान्ति मिलती है, बल्कि यह कि हमें मसीह मिलता है। और यदि आपके पास वह है, तो आपके पास सब कुछ है। आपके पास वह शान्ति है, जो कष्टों में भी बनी रहती है, मृत्यु के समय और गहरी होती है, और अनन्तकाल में जयजयकार करती है। आइए हम केवल उन वस्तुओं का ही आनन्द न लें जो मसीह देता है, वरन् स्वयं मसीह का आनन्द लें।

यहोवा पर स्थिर रहकर हृदय पूर्णतः धन्य हो जाते हैं; और जैसा उसने प्रतिज्ञा की है, वे सिद्ध शान्ति और विश्राम पाते हैं।



THE
MENTORING
PROJECT

डोमिनिक एविला कैलिफ़ोर्निया के मॉन्टेरी बे स्थित ग्रेस चर्च के वरिष्ठ पास्टर के रूप में सेवा करते हैं। वे और उनकी पत्नी जेसिका तीन बच्चों के माता-पिता हैं।

